Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

चम्बा के पारम्पारिक लोक संगीत के संवर्धन में चम्बयाली लोक लेखकों का योगदान

DR. MRITUNJAY SHARMA[1] & VINAY KUMAR[2]

1 Assistant Professor, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

2 Research Scholar, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

सार संक्षेपिका

चम्बा जनपद के चम्बयाली लेखक लोक साहित्य को अपनी लेखनी के माध्यम से प्रोत्साहन देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। यह लेखक साहित्य को संरक्षण प्रदान करने और समाज को अपनी क्षेत्रीय बोली (चम्बयाली) से परिचित करवाने में तनमयता से सक्रिय भूमिका अदा कर रहें हैं। इसके अतिरिक्त यह चम्बयाली लोक लेखक, कवि चम्बयाली साहित्य का औचित्य प्रमाणित करने में निरंतर चम्बयाली लोक गीतों, कविताओं, नाट्यों व लेखों, पहाड़ी कहावतों का नित्य सृजन कर रहे हैं।

बीज शब्द- पारम्पारिक लोक संगीत, चम्बयाली लोक लेखन।

भूमिका

हिमाचल प्रदेश का चम्बा जनपद अपनी प्राचीन ऐतिहासिक पारम्परिक लोक संस्कृति के लिए भी दुनियाँ भर में प्रसिद्ध है। चम्बा की लोक संस्कृति विभिन्न लोक विधाओं को अपने में समेटे हुए है। इन लोक विधाओं में विभिन्न गायन शैलियाँ निहित हैं जिन्हें यहाँ के स्थानीय लोक कलाकार पीढ़ी-दर-पीढ मौखिक रूप से गा-बजा कर समाज में वर्षों से जीवित रखे हुए हैं। यहॉ के लोग अपनी पारम्परिक लोक संस्कृति से अथाह लगाव रखते हैं तथा आज भी लोक संस्कृति में व्याप्त समस्त गायन शैलियों को यथावत बिना परिवर्तन के समाज में गा बजा रहे हैं। चम्बा जपपद के यह लोक कलाकार अपने पूवर्जों के समय से चली आ रही रीतियों को सम्भाले हुए हैं। घुरेई गायन, कुँजड़ी-मल्हार, मुसादा गायन ऐसे ही उदाहरण हैं। इन गायन शैलियों को यदि हम पारम्परिक लोक संस्कृति की अमूल्य धरोहर कहें तो अतिशयक्ति न होगी।

चम्बा जनपद के चम्बयाली लेखक लोक साहित्य को अपनी लेखनी के माधम से प्रोत्साहन देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। यह लेखक साहित्य को संरक्षण प्रदान करने और समाज को अपनी क्षेत्रीय बोली (चम्बयाली) से परिचित करवाने में तनमयता से सक्रिय भूमिका अदा कर रहें हैं। इसके अतिरिक्त यह चम्बयाली लोक लेखक, कवि चम्बयाली साहित्य का औचित्य प्रमाणित करने में निरंतर चम्बयाली लोक गीतों, कविताओं, नाट्यों व लेखों, चवोलों, पहाड़ी कहावतों का नित्य सृजन कर रहे हैं। इस जनपद में लोक साहित्य का बीजारोपण भले ही वर्षों पूर्व कुछ अज्ञात लोगों द्वारा हुआ हो लेकिन स्थानीय लोक लेखकों, कवियों के अथक प्रयासों से आज चम्बा के लोग इसे अपना कहने पर गर्व महसूस करते हैं। इस जनपद के लोक गीत, पारम्परिक कथाऐं, घटनाऐं, चम्बयाली कहावतें, लघु कथायें इन सबकों यहाँ के स्थानीय लेखक, कवि एक सुत्र में पिरो कर समाज में प्रेषित कर सामाजिक जागरूकता लाने का प्रयास

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

कर रहें हैं। यहाँ के अधिकांशतः चम्बयाली लेखक अपने प्राकृतिक स्वभाव से ही लिखने की ओर आकर्षित हुए हैं। कुछेक लेखक अपने पारिवारिक वातावरण से प्रेरणा पा कर लेखन क्षेत्र में अग्रसर हुए हैं। यह लेखक चम्बा की लोक संस्कृति का लेखन विभिन्न विधाओं जैसे छंदमुक्त व छंदबध पहलुओं से कर रहे हैं। चम्बयाली लेखकों का प्रत्येक शब्द व प्रत्येक पंक्ति लोक जनमानस से जुड़ी हुई है।

आज के समय में लोक लेखकों का लेखन चम्बयाली समाज को गर्व महसूस कराने में प्रतिबध कर रहा है। चम्बा क्षेत्र में चम्बयाली लेखकों, कवियों का भिन्न-भिन्न स्थानों पर संगोष्ठियों, कवि सम्मेलनों का आयोजन हो रहा है। इस संदर्भ में यह प्रयास सेतु का कार्य कर रहा है। इस प्रकार के प्रदर्शन चम्बयाली लेखक कलाकार न केवल चम्बा में ही बल्कि इसके बाहर भी प्रतिवर्ष करते हैं। इस तरह चम्बयाली लेखक कलाकार अपने लेखन से चम्बयाली साहित्य संस्कृति को न केवल राज्य स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी स्थापित करने में सफल हुए हैं। चम्बा जनपद एक मात्र ऐसा क्षेत्र है जहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मों के लोग समान रूप से जीवनयापन कर रहें हैं। हालाँकि चम्बा की लोक संस्कृति में पर्याप्त विविधता पाई जाती है। इस बिन्दु पर चम्बयाली लेखकों का समाज के लिए लेखन इनके द्वारा लिखी पुस्तकें लोक संस्कृति की विविधता को एकता में परिवर्तित करती है। इतना ही नहीं जिला भाषा संस्कृति विभाग चम्बा द्वारा भी चम्बयाली लेखक कलाकारों को समय-समय पर मंच मुहैया करा कर समाज के लोगों को चम्बयाली संस्कृति से जोड़ने के सराहनीय प्रयास किये जाते हैं।

इसके साथ साहित्य व लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए इन स्थानीय लेखक-कवियों को उचित पुरस्कार के साथ कवि सम्मेलन व कवि गोष्ठियों का भी आयोजन करवाया जाता है। विशेष बात यह है कि इस प्रकार के आयोजनों से लोक साहित्य लेखन की ओर चम्बा की युवा पीढ़ी और भी अधिक रूचि लेती है। इसके साथ यह चम्बयाली लेखक भी अन्य युवाओं को अपने लेखन सम्बन्धि उपर्युक्त जानकारी दे कर लोक संस्कृति के प्रति जागरूक करने में सहयोग करते हैं।

सम्बन्धित शोध साहित्य

उपरोक्त विषय पर सम्बन्धित शोध कार्य पूर्व में नहीं हुआ है।

शोध प्रविधि

उद्देश्य्

चम्बा के पारम्पारिक लोक संगीत के संवर्धन में चम्बयाली लोक लेखकों का योगदान का अध्ययन करना।

क्षेत्र

शोध क्षेत्र चम्बा के पारम्पारिक लोक संगीत के चम्बयाली लोक लेखकों के योगदान पर केन्द्रित किया गया।

शोध विधि

शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण

शोध सम्बन्धित सामग्री को प्राप्त करने के लिए प्रश्ना वली का प्रयोग किया गया है तथा व्यक्तिगत साक्षात्कारों का प्रयोग किया गया है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

प्रमुख चम्बयाली लोक लेखक

श्री विक्रम कौशल

विक्रम कौशल जी चम्बयाली लोक संस्कृति को अपनी कविताओं, कहानियों, पहाड़ी गीतों के माध्यम से सुरक्षित करने वाले सक्रिय पहाड़ी कवि है। श्री विक्रम जी का जन्म गाँव भटका, डाकघर समोट, तहसील सिहुन्ता, जिला चम्बा में हुआ। श्री विक्रम जी पहाड़ी कवि के साथ लोक गायक भी हैं। इन्हें लिखने की दिलचस्पी बचपन से ही थी। सर्वप्रथम विक्रम जी ने 13वर्ष की उम्र में पहली कथा एक जानवर पर लिखी। पेशे से श्री विक्रम जी सिहुन्ता तहसील के सरकारी स्कूल में अध्यापक है। लेखन के क्षेत्र में इनके गुरु श्री केहर सिंह जी है, जो इनके हिन्दी के अध्यापक भी रहें हैं। पहाड़ी कवि, लेखक के रूप में श्री विक्रम जी 1986 से निरन्तर लिख रहे हैं।

विक्रम जी विभिन्न विधाओं में लिखने की महारत रखते हैं जैसे गेय विधा, दोहे, कुण्डलिया छन्द, माहिया छन्द, घनाक्षरी छन्द, कहमुकरी आदि इसके साथ गजलें भी लिखते हैं। आप छन्दबद्ध मुक्तक भी लिखते है। आप चम्बयाली पहाड़ी व हिन्दी कुल मिलाकर 100 गीत लिख चुके हैं। इनमें से कुछ लोकप्रिय गीत निम्न है।

1 किंयां भुला चम्बे दा प्यार, 2 जली जायां धारा दिये धुरिये, 3 चल मना उपर ता धारा हो, 4 ऊच्चे पहाड़ां देया ठण्डे पाणियां, 5 बाहर लगा भुर भुर हिणा। श्री विक्रम कौशल विभिन्न बाल नाटय, बाल कहानियां, कविताएं आदि लिखते हैं। इनके द्वारा लिखे गए चम्बयाली गीतों, कविताओं में ज्यादातर शृंगार रस व विरह भाव का बाहुल्य रहता है। श्री विक्रम जी द्वारा लिखी गई पहाड़ी कविताएं वीर रस व प्रेम रस से ओत प्रोत होती हैं।

आपके लेखन में छन्द बद्ध व छन्द मुक्त दोनों ही तत्वों का समावेश रहता है। चम्बा जनपद के पहाड़ी लेखक होने के नाते आपके लेखन का मुख्य उद्देश्य चम्बा की सामाजिक संस्कृति के नैतिक मूल्यों से यहां के जनमानस को परिचित करवाना है। आप वर्तमान काल में भी प्रभावकारी लेखन करते हैं। हाल ही में आपने बाल नाटय भी लिखा है लेकिन कोविड 19 के प्रभाव से शेष प्रक्रिया अभी अधर में ही है। श्री विक्रम जी पिछले 35 वर्षों से लेखन क्रिया से जुड़े हैं। इन वर्षों के अन्तराल में आपने शब्दावली व भावों से सम्बन्धित विभिन्न परिवर्तन महसूस किये हैं। आपके गीतों, कविताओं में ब्रह्मपुरी (गद्दीयाली) व स्थानीय बोली पहाड़ी का समावेश रहता है। आपकी बहुत सारी लेखन सामग्री किताबों में लिखित पड़ी है। लेकिन प्रकाशित नहीं हो पाई है। श्री विक्रम जी चम्बा के पारम्परिक मांगलिक गीतों को संग्रहित करके जैसे द्रुणें, बाखडे गीत और एंचलियां एक पुस्तक बना रहे हैं जो आने वाले समय में पाठकों के लिए उपलब्ध हो पाएगी। श्री विक्रम जी के मतानुसार मनुष्य के मनोभावए चिन्तन आदि तत्व लेखन क्रिया में महत्वपूर्ण होते हैं जो कि समय स्थितियों के अनुरूप बदलते रहते हैं और इसी के अनुरूप कोई भी लेखक अपने लेखों को पूरा करने में समर्थ हो पाता है। आप चम्बा की लोक संस्कृति को सही दिशा में अग्रसर करने में लेखन के माध्यम से सराहनीय प्रयास कर रहे हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

श्री गुलशन पाल

श्री गुलशन पाल चम्बा के पहाड़ी कवियों, लेखकों में काफी मशहूर है। यह ज्यादातर सम सामायिक घटनाओं पर लिखते हैं। गुलशन जी का जन्म चम्बा जनपद के परेल गाँव, डाकघर सुलतानपुर, तहसील चम्बा, जिला चम्बा में हुआ। आप पिछले 13 वर्षों से लिख रहे हैं। आप अपने आप से ही शौक तौर पर लिखते है। श्री गुलशन जी लगभग 40 गीत लिख चुके हैं। इनमें से पाँच लिखे हुए गीतों का लोकार्पण हो चुका है। इसके साथ लगभग 20-25 पहाड़ी कविताएं भी आपने लिखी हैं। आपके द्वारा लिखे कुछ प्रसिद्ध गीत हैं खाणा-पिणा मौजू लेई लैणा, दिन जिन्दडी दे चार, ऊचेयां पहाड़ा दी सैर कराईये, राविया किनारे मेरा चम्बा सैर बसदा आदि। आप छन्द मुक्त व छन्द बद्ध दोनों विधाओं में लिखते हैं। आपकी लेखन सामग्री गेयात्मक ही होती है। आपके लिखे गये गीतों में लगभग सभी रसों का आभास रहता है। गुलशन पाल जी अपने पहाड़ी गीतों में चम्बयाली बोली के शब्दों का ज्यादा प्रयोग करते है। जैसे कुलि-लड़की, गबरू-लड़का, परू-परार-पिछले से पिछला साल आदि। वर्तमान समय से पुराने समय की तुलना करते हुए आपकी एक कविता काफी लोकप्रिय है 'चिट्ठी पतरी आजकल मेल होई गई कम करन मशीना म्हाणु बेल होई गई'।

श्री गुलशन जी चम्बा के लोक गायक भी हैं और ज्यादातर अपने लिखे चम्बयाली गीत साथ ही पारम्परिक लोक गीत भी गाते हैं। इनके गीतों में श्रृंगार रस, प्राकृतिक प्रेम भाव, विरह भाव व सामाजिक घटना तत्वों की बहुलता ज्यादा रहती है। यह किसी एक ही विषय पर लिखना पसंद नहीं करते हैं। गुलशन जी अपने मानसिक पटल पर उभरने वाले विचारों को व समाज में हाने वाली घटनाओं को पहाड़ी गीतों के माध्यम से श्रोताओं को प्रेषित करते हैं। आप मांगलिक, धार्मिक भजन भी लिखते हैं। अभी चम्बा स्थित द्वार महोदव के ऊपर आपने पहाड़ी भजन लिखा जो बड़ी जल्दी श्रोताओं को यूट्यूब पर सुनने को मिलेगा। श्री गुलशन जी अपने गीतों व लेखों में चम्बयाली (ठेठ) शब्दों का प्रयोग करते है ताकि चम्बा की लोक संस्कृति का लोगों के बीच प्रचार-प्रसार होता रहे। साथ ही चम्बा का युवा वर्ग संस्कृति से जुड़ा रहे। पहाड़ी कवि साथ ही लोक गायक होने के नाते आपके लिखे गीतों का उद्देश्य चम्बा की संस्कृति के नैतिक मूल्यों को बचाना है। चम्बा की पारम्परिक लोक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में आपके पहाड़ी गीतों का योगदान सराहनीय है।

श्री अंक भट्ट

अंक भट्ट का जन्म चम्बा जनपद के धड़ोग मुहल्ला में हुआ है। इनका जन्म संगीत से सम्बन्धित परिवार में हुआ है। आपके दादा स्व॰ सरदार प्रेम सिंह भट्ट चम्बा के रियासत काल के सुप्रसिद्ध लोक कलाकार रहे हैं। वर्तमान में इनके चाचा अजीत सिंह भट्ट कुंजड़ी-मलहार लोक गायन का संरक्षण-संवर्धन करने में जुटे हैं। अपने दादा व चाचा से प्रेरणा पाकर श्री अंक लेखन क्षेत्र में आए है। अंक अपनी रचनाओं में भट्ट चम्बयाली नाम का प्रयोग करते है। श्री अंक भट्ट 17 वर्ष की उम्र से लिख रहे हैं। आपके लेखन की विशेषता है कि आप चम्बयाली स्थानीय बोली में ही लिखते हैं। आप अब तक लगभग 50-60 चम्बयाली गीत व कविताएं लिख चुके हैं। आपकी लिखी प्रथम रचना 'सुनामी' लहरों पर है। 'जाती रही तमन्ना दिल से घर बनाने की' खबर जब से सुनी सुनामी लहरों के आने की'।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

श्री भट्ट चम्बयाली अपने लेख 'गीत विधा' में लिखते हैं, प्राकृतिक सौन्दर्य व श्रृंगारिक रसों में लिखना आपको ज्यादा पसन्द है। आपके गीतों में प्रेम विरह, माँ-बेटी के स्नेह भाव, विरह भाव के तत्वों का बाहुल्य रहता है। श्री अंक भट्ट के अनुसार लेखक के गीतों, कविताओं में वहां की स्थानीयता भावों का होना अनिवार्य है, इसके साथ लेखक अंक भट्ट अपने गीतों में स्थानीय चम्बयाली बोली शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे- मन्दिर, चाँदी-रूपा, चोंच-चुंज, चेता आया-याद आई, कंहां जाणा-कुती जाणा, यहां आओ-इते इया आदि भट्ट चम्बयाली जी के लेखन की विशेषता है कि आपके गीतों में, कविताओं में, सामाजिक भलाई, उन्नति जैसे तत्वों का समावेश रहता है। वर्तमान में श्री अंक अपने पहाड़ी गीतों में चम्बा के इतिहास की घटनाओं को भी शामिल करते है। जयादातर अंक अपने गीतों में चम्बा की प्राकृतिक, सामाजिक तत्वों जैसे खान-पान, रहन-सहन, पारंपरिकता, वेशभूषा आदि को ज्यादा उजागर करते हैं ताकि चम्बा की लोक संस्कृति जिंदा रह सके। श्री अंक भट्ट के लिखने का उद्देश्य अपने गीतों व कविताओं के माध्यम से चम्बयाली लोक संस्कृति को आम जनमानस के मानसिक पटल पर उतारना है। ताकि यहां का युवा वर्ग चम्बयाली संस्कृति व सभ्याचार से परिचित रहे सके। अंक भट्ट विभिन्न कवि गोष्ठियों व सम्मेलनों में भाग लेकर चम्बा की पारम्परिक लोक संस्कृति को सहेजने में अपना निरन्तर सक्रिय योगदान देते रहते है ताकि चम्बयाली संस्कृति व सभ्यता की जड़ें मजबूत बनी रहें।

श्रीमती लीला ठाकुर

श्रीमती लीला ठाकुर चम्बा जनपद के गाँव चुड़ी पुल, डाकघर चुड़ी, तहसील व जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश से सम्बन्ध रखने वाली हैं। आपका जन्म 16 मार्च, 1958 को ग्रामीण परिवेश में हुआ। परिवार में आपके पिता जी ऐंचलि गायन करते थे। छोटी सी उम्र में जब आपको लिखने का अर्थ शायद ही पता था, पांचवी कक्षा में आपने चम्बा की रावी नदी पर कविता लिखी। आपका बचपन का शौक ही आपको आगे लेखन क्षेत्र में खींच लाया। लगभग 25 वर्ष की आयु से आप निरन्तर लिखती आ रहीं हैं। हालांकि आपके जीवन के उतार-चढ़ावों ने आपको बीच में लिखने से रोक दिया लेकिन कुछ समय बाद फिर यह कार्य शुरू हो गया। आप विशेष रूप से अमर सिंह रणपतिया और गुलशन नंदा जी को लिखने में अपना आदर्श मानती है। आप विभिन्न विधाओं जैसे टप्पे, माहिए, चम्बयाली व गद्दीयाली गीत, पहाड़ी कविताएं आदि में लिखती है। खास तौर पर सांस्कृतिक, सामाजिक तत्व जैसे नारी प्रताड़ना के विरूद्ध व सामाजिक कुरीतियों पर लिखना आपको पसन्द है। श्रीमती लीला ठाकुर विशेष रूप से चम्बयाली व ब्रह्मपुरी (गद्दियालीद्) बोली में पहाड़ी गीत और कविताएं लिखती हैं। आपके द्वारा लिखे कुछ गीत अग्रलिखित है-'चम्बा सुन्दर सहाना हो चम्बे दियाँ सोणियाँ पहाड़ीयाँ। ऊची-ऊची घाटियां बर्फा ने ढकियाँ दिखणे दा सुन्दर नजारा हो'। 'हाए गोरिये तू ता नचे ढोला रिताल'। 'दन्दडुए दा हासा तेरा फुलां दि बहार' ओ मेरे दिले दा करार'। 'झांझरू, छणकादि मेरी भाबो कुत्थुऐ जो चली पैंदी हो'। 'ठंडी हवा रे झुलारे हो तेरे पिछे ता मैं गोरिए तोड़ै अम्बरा दे तारे हो' आदि। इसके अतिरिक्तन आपके द्वारा लगभग 10 पहाड़ी कविताएं भी लिखी गई हैं। 'चांदी के दाग', 'मृग तृष्णा', 'स्वोर-लहरी', 'आत्मदाह', शीर्षक नामक किताबें आपकी स्वयं रचित हैं। आपकी गेय रचनाओं में श्रृंगार रस, प्राकृतिक सौन्दर्य, विरह भाव, वात्सल्य भाव आदि तत्वों की बहुलता रहती है। आपके अनुसार 25 वर्ष पूर्व के भावनुभाव, चिन्तन, मानसिक विचारों में काफी कुछ परिवर्तन आए हैं क्योंकि यह सब प्रकृति की विडम्बना है। यहां

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

परिवर्तन प्रकृति का नियम है वाला कथन बिल्कुल सही उतरता है। श्रीमती लीला ठाकुर कुछ एक सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़ी है। आप समय-समय पर इन संस्थाओं के माध्यम से चम्बयाली पारम्परिक संस्कृति को यहां के जनमानस के साथ सांझा करती रहती हैं। चम्बा जिला भाषा संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न कवि सम्मेलनों व गोष्ठियों में आप अपने गीतों, कविताओं व अन्य लेखों को समाज में पर्याप्त रूप से परोसती हैं। आपके लिखे लेखों, गीतों, कविताओं व कथाओं का मूल उद्देश्य चम्बा के सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों की अभिवृद्धि कर पारम्परिक लोक संस्कृाति का संरक्षण-संवर्धन करना है। आप सन् 2009 व 2013 में भोपाल स्थित 'इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय' के कवि सम्मेलन में अपनी पहाड़ी कविताओं व गीतों के माध्यम से चम्बयाली संस्कृति को प्रचारित-प्रसारित कर चुकी हैं। इन सब सराहनीय प्रयासों के लिए आपको सन् 2011में 'सांस्कृतिक संस्था पटियाला' द्वारा सम्मानित भी किया गया है। भोपाल के इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय द्वारा भी 2013 में आपको सम्मानित किया गया है। वर्तमान में भी जब कभी भी सांस्कृतिक कवि सम्मेलन चम्बा में होता है तो आप उसमें सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। चम्बा जनपद के सामाजिक, सांस्कृतिक व सभ्याचार के नैतिक मूल्यों को अपने लेखन के माध्यम से युवा पीढ़ी तक पहुंचाने में आप महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

श्री जगजीत

श्री जगजीत जी का जन्म गाँव संग्रैहन, डाकघर बलेरा, तहसील डलहौजी, जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश में हुआ। आपके पिता जी का नाम स्व॰ मुंशी राम था जो एक गायक व लेखक थे। श्री जगजीत जी का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जहां लोक संस्कृ ति व साहित्य का काफी प्रभाव था। आप सर्वप्रथम अपने माता-पिता जी से प्रेरणा पाकर लेखन क्षेत्र में आगे बढ़े हैं। इसके बाद आप अपने बड़े भाई स्व॰ तिलक आजाद जी को अपना प्रेरणा स्रोत मानते हैं। यदि हम गुरु की बात करें तो आप डॉ॰ प्रेम भारद्वाज जी को अपना गुरु बताते हैं।

आप बताते है कि आप मात्र 19 वर्ष की आयु से लिखना आरम्भ हो गये हैं। इस उम्र में सन् 1996 में आपकी पहली हिन्दी रचना थी जो इस प्रकार है-'तस्वीर के सहारे जिन्दगी जीना बहुत रास आया, अब तो रू-ब-रू की तमन्ना न रही'। जगजीत जी विभिन्न विधाओं जैसे कविता, चम्बयाली गीत, पहाड़ी कथाएं आदि में लिखते हैं। आप लगभग 200-250 पहाड़ी कविताएं, पहाड़ी गीत, गजलें आदि लिख चुके हैं। इनमें से आपने 25-30 पहाड़ी चम्बयाली गीत लिखे हैं। कुछ इस प्रकार है-

1 ठंण्डे पिपले दियां छायां मिंजो मिली जायां तू, कुछ गल सुणया मेरी कुछ अपणी सुणायां तू

2 किजो बोलदा तू रोज-रोज कागा दिले जो जलांदा तू, फौजी कुतु है तू कदू घरे औणा कुछ ना सुणादा तू

3 हूण कसमां ना पा तू गोरिये आपू जो भूलाणे दियां टैम सब जख़्मा जो भरी दिंदा गलां हैन गलाणें दियां

4 मने दे अन्दर कालख़ कितनी बार टिका-टारा था नी था बस इक प्यार महोबत बाकी मसला सारा था।'

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

यह सब चम्बयाली पहाड़ी गीत यहां चम्बा क्षेत्र के लोक गायकों द्वारा गाये गये हैं। श्री जगजीत जी छन्दबद्ध व छन्दमुक्त दोनों ही विधाओं में बड़ी कोमलता से लिखते हैं। आपका लेखन आंशिक रूप से गेयात्मक होता है। आप वीर रस, शृंगार रस व विरह भाव जैसे तत्वों को लेकर अपना लेखन करते हैं। आपके द्वारा वीर रस से ओत प्रोत लिखी कविता काफी मार्मिक जान पड़ती है जो इस प्रकार है- 'उठो शहीदो देखा था जो तुमने ख़वाब अधूरा है' क्रान्ति अभी अधूरी है क्या है सच्ची आजादी अभी यह हिसाब अधूरा है।'

श्री जगजीत जी अपने गीतों, कविताओं में सामाजिक विसंगतियों, मानसिक कुंठाओं को मुख्य विषय बनाते हैं। इसके साथ आप नैसर्गिक सौंदर्य, प्रेम भाव, चम्बा के सामाजिक रहन-सहन, भाषा-वेशभूषा जैसे विषयों पर लिख कर चम्बा की पारम्परिक विरासत में वृद्धि करने का काम करते हैं। आपकी कविताओं, गीतों व अन्य लेखों का उद्देश्य चम्बयाली संस्कृति को युवा पीढ़ी के हृदय में बसाना है, ताकि ये पीढ़ी अपनी ऐतिहासिक विरासत से विमुख न हो जाए। पहाड़ी लेखक होने के नाते आप चम्बयाली पारम्परिक शब्दों का ज्यादा प्रयोग करते है जैसे कालख़-काली स्याही, डंड कलह-लड़ाई झगड़ा, सटाका-अचानक, छमाका-विस्फोट आदि आपके द्वारा लिखी गई कुछ धार्मिक प्रार्थनाएं ;गीतद्ध स्कूलों में बच्चों द्वारा गाई जाती है जो आपकी विशिष्ट उपलब्धि है। श्री जगजीत आजाद के अनुसार इनके लेखन में प्रमुख परिवर्तन यह आया है कि यह युवावस्था के दौरान शृंगार रस पर अधिक लिखा करते थे और वर्तमान में सामाजिक सरोकार से सम्बन्धित लिखते है। यह शायद बढ़ते समय के कारण मनोभाव व चिन्तन में परिवर्तन समझा जा सकता है। आप चम्बा जनपद के अतिरिक्त जैसे दिल्ली, चण्डीगढ़ जैसे शहरों में भी विभिन्न कवि गोष्ठियों व सम्मेलनों में भाग ले चुके हैं। बात यदि अपने राज्य की करें तो हिमाचल के लगभग सभी कोनों में आपने अपनी प्रस्तुतियां दर्ज करवाई हैं जैसे चम्बा, ऊना, हमीरपुर, कांगड़ा, मण्डी, शिमला, मनाली आदि। आपको पहाड़ी चम्बयाली संस्कृति का विस्तार करने के लिए विभिन्न पुरस्कार भी मिले हैं। आपको सन् 2013 में 'सरस फिल्म सम्मान' चण्डीगढ़ से सम्मानित किया गया है। साथ ही सन् 2015 में 'निखिल शिखर सम्मान मध्यढ़ प्रदेश' द्वारा भी आप सम्मानित हो चुके हैं। इसके साथ सन् 2016 में 'साहित्य के सितारे सम्मान' भी आपके हिस्से में आया है, अन्य कई सम्मान आपको अपने लेखन के लिए मिल चुके हैं। श्री जगजीत जी के उत्कृष्ट लेखन चम्बयाली पहाड़ी संस्कृति को विस्तारने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है।

श्री प्रीतम सिह

श्री प्रीतम सिंह का जन्म 10 मार्च, 1965 को जिला चम्बा में गाँव बनीखेत, डाकघर बनीखेत, तहसील डलहौजी, जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश में हुआ। श्री प्रीतम जी अपने बाल्यकाल में स्कूल के दिनों में कविताएं पेश किया करते थे। यह शौक ही आपको लेखन क्षेत्र में आगे लेकर आया। आपने लेखन क्षेत्र में वीरप्रताप के संपादक श्री विरेंद्र जी से प्रेरणा पाकर लिखना आरम्भ किया। सर्वप्रथम 15 वर्ष की आयु से आपने लिखना शुरू किया। आप चम्बयाली कविताएं, पहाड़ी गीत, ग़जलें, लघु कथाएं, कहानियां लिखते हैं। श्री प्रीतम जी लगभग 500 पहाड़ी गीत व कविताएं लिख चुके हैं। आपके लेखन में चम्बयाली सामाजिक व संस्कृति के उत्थान के लिए आम जनमानस को संदेश विद्यमान होता है। आपके लेखन की विधा छन्दबद्ध होती है। प्रीतम जी के लेखन में श्रृंगार रस, प्रणय भाव व विरह भाव जैसे तत्वों का बाहुल्य होता है। वर्तमान में भी आपका लेखन निरन्तर जारी है। श्री प्रीतम जी चम्बा की धार्मिक,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

सामाजिक व संस्कृति से जुड़ी विभिन्न इकाईयों जैसे खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल, वेशभूषा पर लिखना पसंद करते हैं। इसके अतिरिक्त आप चम्बा के मेले-त्यौहार, मन्दिरों, संस्कारों, प्राकृतिक सौंदर्य, प्रेम रस में लिप्त कविताएं आदि लिखते हैं। चम्बा के पर्यावरण सम्बन्ध में व यहां के व्यक्तिगत समस्याओं से जुड़ी बातों पर भी लिखना पसन्द करते हैं। आपके लेख अधिकतर चम्बयाली बोली में होते हैं। अब आप लोगों के आग्रह पर चम्बा के लोक गायकों के लिए भी पहाड़ी गीत लिख रहे हैं।

श्री प्रीतम जी चम्बा के पौराणिक ऐतिहासिक तथ्यों व कथाओं को अपने लेखन के माध्यम से उजागर कर यहां के जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं। आप के लिखने का उद्देश्य चम्बा की सामाजिक-संस्कृति व संस्कारों का प्रचार-प्रसार करना है ताकि चम्बा की युवा पीढ़ी अपनी लोक संस्कृति से जुड़ी रहे। श्री प्रीतम जी के अनुसार पुराने सामाजिक परिवेश और वर्तमान परिवेश में बहुत परिवर्तन आया है, जिसके फलस्वरूप लेखन सम्बन्धी विचारों, भाव चिन्तन पर भी प्रभाव पड़ा है। काफी समय पहले आपने एक किताब लिखी जिसका नाम 'यह आवाज किसकी थी' था। आपके द्वारा लिखे हुए लेखन काफी समय पहले 'वीर प्रताप', 'दैनिक ट्रिब्यून', 'जनसत्ता।' आदि पत्रों में निरन्तर छपते रहे हैं। आज के समय में दिव्य हिमाचलए दैनिक जागरण, हिमसता, आपका फैसला आदि समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। श्री प्रीतम जी जिला चम्बा में होने वाले प्रत्येक कवि सम्मेलनों व संगोष्ठियों में सक्रिय भाग लेकर अपनी लोक संस्कृति के प्रति जनमानस को प्रेरित करते रहते हैं। आप एक सरकारी नौकरी पर होने के कारण बाहरी क्षेत्रों में होने वाले सम्मेलनों में उपस्थित नहीं हो पाते है। आपको अपने लेखन सम्बन्धी कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं इनमें से 2019 में आपको चम्बा संस्कृति व साहित्य द्वारा 'कुशल लेखक' का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। श्री प्रीतम जी का लेखन चम्बा की पारम्परिक लोक संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन में एक सराहनीय प्रयास है।

श्रीमती मंजु चिश्ति

चम्बा जनपद की चम्बयाली लोक संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाली श्रीमती मंजु चिस्ति जी न केवल एक प्रसिद्ध लोक गायिका हैं। बल्कि एक सुलझी हुई लेखिका भी है। इनका जन्म 25 मार्च, 1964 को एक सांगीतिक परिवार में हुआ। आपका बाल्यकाल ग्रामीण परिवेश में गुजरा है। आपको गायन के लिए प्रोत्साहन अपनी माता व मासियों से मिला है। जबकि लिखने के लिए आप अपने प्राकृतिक स्वभाव से प्रेरित है। इस विषय में आपका कोई गुरू नहीं है। आप अपने स्कूल के दिनो में ही छिटपुट कविताएं लिखती थी। मंजु चिस्ति जी लगभग 100 से अधिक पहाड़ी चम्बयाली गीत लिख चुकी हैं। आपकी मुख्य विशेषता आप अपने लिखे हुए गीत व साथ में पारम्परिक गीत गाना पसंद करती हैं। आपके लिखे कुछ गीत इस क्षेत्र में श्रोताओं में काफी लोकप्रिय है। जैसे

1 'रावि बोले शोंकिया जबाना होए ठण्डि छाँव चम्बे रे चौगाना हो।
इका गेरा ता कदि काले लायां ब्यार ठण्डि छायां ता फीरी गलां लायां हो'

2 'उची चीलां ते दयारां ठण्डी झुलदी दयारां, चीडु ऊठी-ऊठी बैंदे गीत नोए-नोए गान्दे

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

ऐ चौगान चम्बे दा मेरा दिल गदिया, मिंजो सुपने न आ आइके मिल गदिया'

आपके द्वारा लिखे चम्बयाली गीत व कविताएं छन्द बद्ध व छन्दमुक्त दोनों पहलुओं सहित होते हैं। श्रीमती मंजु जी विभिन्न विधाओं जैसे उल्लास, विरह, नोक झोंक, नृत्य गीत आदि लिखती हैं। आपने साक्षरता पर आधारित एक लघु नाटक 'दल-दल छप-छप ओर कुछ लोग' भी लिखा था। आप अपने गीतों में चम्बा के सामाजिक सरोकार, लोक संस्कृति के विभिन्न आयामों जैसे खान-पान, रहन-सहन, भाषा, वेशभूषा आदि विषयों को ज्यादातर शामिल करती हैं। वर्तमान में भी आपका लेखन निरन्तर चलता आ रहा है। बदलते समय का प्रत्येक व्यक्ति पर प्राकृतिक रूप से असर पड़ता है, ठीक उसी प्रकार श्रीमती मंजु जी के लेखन में भी मनोभाव व चिंतन का प्रभाव पड़ा है। मंजु जी द्वारा लिखा एक चम्बयाली गीत बड़ा लोकप्रिय है जो इनके स्वयं के अतिरिक्त कई अन्य लोक कलाकारों ने भी गाया है जो इस प्रकार है- डुगी मेरी ढाकणी री बाई उची मेरी मंगले दे रेडियां। कियां खोला पैरां केरी बेड़ियां चम्बे जो चली जाणा हो'।

आप विरह भाव से ओत-प्रोत पहाड़ी गीत भी लिखना पसंद करती हैं। आपका लिखा एक विरह गीत बड़ी जल्दी श्रोताओं के बीच आने को तैयार है जो इस प्रकार है- 'अम्मा जी बोलणा बेदरदिये तिजो धियुरी दर्द नी आई, होर ता दिती सब नेडे-नेडे मैं। कि जो दूर ब्याही तिजो मेरी दर्द नी आई'।

इसके अतिरिक्त आपने भक्ति रस से लिप्त भलेई माता बनी माता पर भजन भी लिखे हैं साथ ही शम्भू दर्शन नामक कैसेटस में शिव भजन भी लिखे हैं। आपके पहाड़ी गीतों व पहाड़ी कविताओं की चम्बा क्षेत्र में पर्याप्त लोकप्रियता है। आप सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक विषयों के साथ-साथ चम्बा की पौराणिक ऐतिहासिक विरासत पर भी लिखती हैं। चम्बा के इतिहास से सम्बन्धित माता सूई पर भी भजन लिखे हैं। श्रीमति मंजु चिस्ति जी चम्बा जनपद की लोकप्रिया लोक गायिका है मंजु जी ने अपने लिखे गीतों के माध्यम से चम्बा की सामाजिक धार्मिक व संस्कृति विरासत को सहेजने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। मंजु जी ने विरह, शृंगार, मातृ, प्रेम, उल्लास, नोक झोंक फाटेहडु, नृत्य गीतों के माध्यम से चम्बयाली लोक संस्कृति को यहां के लोगों के मन-मस्तिष्क पर उतारा है। मंजु जी के लेखन का उद्देश्य अपने गायन व लेखन के माध्यम से पारम्परिक लोक संस्कृति को सहेजना है साथ ही इसका प्रचार-प्रसार भी करना है ताकि यह लोक संस्कृति चिर स्थाई रूप से जीवित रह सके। चम्बा की संस्कृति के उत्थान में आपका योगदान काबिले तारीफ है।

श्री खेम राज खन्ना

श्री खेम राज खन्ना चम्बा जनपद की चुराह घाटी से सम्बन्ध रखते हैं। खेम राज जी अपने लेखों पहाड़ी कविताओं व गीतों में चुराही बोली का हस्तेमाल करते हैं। आप हिन्दी में भी अपना लेखन करते हैं श्री खेम राज जी का लिखने के लिए उत्साहवर्धन यहां मनाये जाने वाले तीन दिवसीय चुराह उत्सव से हुआ। आपने 20वर्ष की उम्र से लिखना शुरू कर दिया था। सन् 1997 में आपने पहली कविता लिखी जिसका शीर्षक 'अनपढ़ता' था ये कविता इस प्रकार थीरू 'सरकारी चला पूरे दैसा मझ साक्षरता अभियान, कोवे अनपढ़ न रिया वणा एतेया विधान'।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

श्री खेम राज जी का जन्म 9 सितम्बर, 1974 को श्री लाल चन्द जी के घर हुआ। आपका अपना प्रकृतिक स्वभाव ही आपको इस दिशा में लेखन के लिए लेकर आया है। आप लगभग चुराही बोली में 35 कविताएं, हिन्दी में 100 से ऊपर साथ ही कुछ गीत भी चुराही बोली में लिख चुके हैं। श्री खेम राज जी अधिकतर समाजिक बुराईयों, अंधविश्वास, मंहगाई बेरोजगारी, नशा, शिक्षा, पर्यावरण, महिला आदि विषयों पर लिखते हैं। इनके लेखों में समाजिक चेतना, जनमानस को उजागर करने वाले संदेश होते हैं। आप समाज की सत्य घटनाओं पर लिखते हैं। आप छन्दबद्ध व छन्दमुक्त दोनों विधाओं में लिखते हैं साथ ही आपके लेखों में गेयात्मकता का भाव रहता है। थोडे समय पहले आपने ष्चुराइयारी परियाण' शीर्षक नामक कविता लिखी जो इस प्रकार है।

'झझ थाणेई सोगा सेई त्रैयु राजे री बैड़ी प्यारी बैई'। इस चुराही कविता में आपने चुराह की समाजिक, धार्मिक संस्कृतिक, ऐतिहासिक सभी तत्वों का समावेश करने का प्रयास किया है। श्री खेम राज जी के गीतों, कविताओं व अन्य लेखों में जन-मानस को सचेत करने के लिए व झकझोरने वाला विषय होता है। यदि भाव से सम्बन्धित बात करें तो आप भक्ति भाव, क्रान्तिकारी भाव व समाज कल्याण भाव से ओत-प्रोत गीत, कविताऐं, कथाऐं लिखते हैं। खेम राज जी यह कोशिश करते हैं कि अपने लेखन के माध्यम से चम्बा की संस्कृति व ऐतिहासाकिता को यहां के लोगों के बीच में पहुंचाया जाये ताकि लोग अपनी संस्कृति व ऐतिहासिक तथ्यों को भूल न पायें। आपने अपने जीवन में लेखन सम्बन्धि विभिन्न कवि सम्मेलनों व कवि गोष्ठियों में भाग लिया है। जैसे स्वच्छता अभियान, डिस्ट्रिक्ट प्राईमरी एजुकेशन प्रोग्राम, विभिन्न चम्बा के एन॰जी॰ओ॰ के माध्यम से पूरे चुराह और भटियात तहसीलों के स्कूलों में अपने लिखे गीतों और कविताओं के माध्यम से प्रस्तुतियां दी हैं। यहां मनाये जाने वाले छिन्ज मेलों व अन्य स्थानीय कार्यक्रमों में आप सक्रियता से भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त आपने जिला भाषा संस्कृति विभाग चम्बा के माध्यम से राज्य् स्तरीय व राष्ट्रीय स्तर पर भी विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया है। 7 जुलाई 2011में पटियाला संस्कृति साहित्य संस्था द्वारा चम्बा में आयोजित कार्यक्रम में आपने प्रभावकारी प्रस्तुति दर्ज करवाई है। इस कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि इस प्रोग्राम में पूरे देश के कवियों को चम्बा में बुलाया गया था। आपको अपने लेखन के लिए कई बार सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 7 जुलाई 2011को आपको अपने सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान सम्बन्धी लेखों के लिए 'सारश्वत सम्मान' से नवाजा गया है। आपका लक्ष्य अपनी कविताओं व गीतों के माध्यम से यहां की लोक संस्कृति का प्रचार प्रसार करना मात्र है साथ ही आम जनमानस को संस्कृति से जुड़े रहने का संदेश भी देना है इस दिशा में आपका यह प्रयास सराहनीय है।

श्री राकेश कुमार

श्री राकेश कुमार जी का जन्म जिला चम्बा के गाँव चुहाड़ी, डाकघर राजेरा, तहसील व जिला चम्बा में श्री चन्दलाल जी के घर 11 जुलाई 1985 को हुआ। ग्रामीण परिवेश में पैदा हुए राकेश जी बाल्यकाल में रेडियो और अखबारों से सर्वप्रथम लेखन के लिए प्रेरित हुए। 18 वर्ष की आयु में आपने पहली कविता की रचना की जिसकी पंक्तियाँ इस प्रकार हैं- 'हे मेरे मन तू शहर में जाकर फूँक-फूँक कर रखना पाँव रहती है यहाँ फरेबी दुनियाँ ये नहीं है मेरा गाँव।' आप अपने अध्ययन के दौरान छायावादी महान् लेखक श्री निराला जी की कविताओं व साहित्य से काफी प्रभावित हुए। आप अपने हिन्दी के प्रध्यापक डॉ॰ संतोष जी से भी काफी प्रोत्साहित हुए। इसके साथ आप डॉ॰ नन्द लाल ठाकुर जी को अपने लेखन का समस्त श्रेय देते हैं। आपके अनुसार यह ऐसे

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

व्यक्ति थे जिन्होंने आपके अन्दर छिपी हुई प्रतिभा को निखारने में काफी मदद की आप डॉ॰ नन्द लाल जी को अपना गुरु बताते हैं। आप गागल सीनियर सकैंडरी स्कूल चम्बा में भाषा अध्यापक के पद पर अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। श्री राकेश जी द्वारा रचित रचनाऐं गेयात्मक रूप में होती हैं। आप छन्द बद्ध व छन्दमुक्त दोनों ही रूपों में लिखना पसंद करते हैं। आपके मतानुसार छन्द मुक्त ऐसी विधा है जिसे समझना थोड़ा मुश्किल होता है। आप चम्बयाली स्थानीय बोली में चबोले ;कहावतेंद्ध, टप्पे, पहाड़ी कविताऐं व गीत आदि लिखते हैं और इनमें ज्यादातर वैराग्य भाव की बहुलता होती है। श्री राकेश जी ने चम्बा की नैसर्गिक सुन्दरता, ऐतिहासिकता व धार्मिक संस्कृति व समाजिकता पर अनेक कविताएं लिखी है। इनमें से समाज के आम जन-जीवन पर आधारित एक कविता निम्न हैरू 'रूक ओ भईया अज कोई गल नी सुनाणी'। इस प्रकार चम्बा के एतिहासिक चौगान से सम्बन्धित कविता निम्न हैरू 'ए-मेरे चम्बा के एतिहासिक चौगान, पैसों के लिए हर वर्ष क्यूँ हो जाता है निलाम

आप कई बार राज्य स्तरीय कवि सम्मेलनों में भाग ले चुके हैं और वर्तमान भी भाग लेते हैं आपने राष्ट्र स्तरीय ललित कला अकादमी नई दिल्ली में वर्ष 2019 में भी भाग लिया है। ललित कला अकादमी में आपके प्रभावी मंच प्रदर्शन के लिए आपको सम्मान सहित प्रशस्ति प्रत्र प्राप्त हुआ है। कला साहित्य संस्था पटियाला द्वारा भी आप 'सरस्वती सम्मान से सम्मानित हुए है। वर्तमान में श्री राकेश जी संस्कार भारती संस्था के जिला संयोजक भी हैं। श्री राकेश जी का उद्देश्य अपने गीतों, कविताओं, कहानियों के माध्यम से चम्बयाली जनमानस को यहां की पौराणिक ऐतिहसिक, लोक संस्कृति से जोड़े रखना है ताकि इस चम्बा-अचम्भा की संस्कृति सदा-सदा के लिए जीवित रह सके। इस उद्देश्य हेतु आपके लेखन सम्बन्धि प्रयास बड़े सराहनीय है।

श्री अशोक दर्द

श्री अशोक दर्द चम्बा जनपद के जानेमाने हिन्दी व पहाड़ी लेखक है। इनका जन्म 23 अप्रैल, 1966 को श्री भगत राम जी के घर गाँव घट, डाकघर शेरपुर, तहसील डलहौजी जिला चम्बा में हुआ। वर्तमान में आप गवरमैंट सिनियर सकैंडरी स्कूल में हिन्दी भाषा के अध्यापक के रूप में अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। आपकी लेखन क्रिया 13वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो गई थी। आठवीं कक्षा में आप रेडियों पर कविता पाठ का कार्यक्रम सुन कर बड़े प्रभावित हुए और यही वो समय था जब आप लेखन क्षेत्र में आगे बढ़े। आपने सन् 1983 में बैसाखी के दिन अपनी पहली कविता लिखी। आपने चम्बयाली बोली में कविताऐं, गीत, भजन संख्या में 1000 से भी ज्यादा लिखे हैं।

श्री अशोक दर्द जी पिछले 22 सालों से विभिन्न पत्रिकाओं व समाचार पत्रों में लगातार छपते रहे है। इसके साथ शुक्रबार के दिन समाचार पत्र पंजाब केसरी के साहित्यिक पेज पर आपके दर्जनों लेख छपते रहे हैं। आपके द्वारा लिखे चम्बयाली गीतों में गेयता का भाव विद्यमान होता है। श्री अशोक जी कुछ तुकांत कुछ अतुकांत कविताऐं, हायकु, मुकतक छंद भी लिखते हैं। आपके लिखे चम्बयाली गीतों को विभिन्न चम्बयाली लोक गायकों ने गाया है कुछ गीत निम्न है-

1 गदण गलांदी सुण मेरे गदिया चल मुथेआ भटिया जो जाणा हो'।

2 हो गोरिये चल चम्बे जो दिखणा जे पहाड़ा रा नजारा।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

आपका समस्त लेखन छंदबद्ध व छंदमुक्त दोनों ही रूपों में होता है। दर्द जी के लेखों का मुख्य विषय समाजिक सरोकार व नैतिक आचरण होता है। यदि इस सम्बन्धि बात करें तो आपके अनुसार जैसे मन की स्थिति, भाव चिन्तन होता है वैसे ही रस में लेख रचित होता है। अपने चम्बयाली संस्कृति पर आधारित विभिन्न उपनान, चबोले, लोक-कथाऐं, कविताएं आदि लिखे हैं कुछ में काल्पनिक भाव व कुछ में नैतिक भाव दृष्टिगोचर होते हैं। श्री अशोक जी ने कई धार्मिक भजन भी लिखे हैं चम्बा जनपद से होने के कारण अपने चम्बा की ऐतिहासिकता, समाजिक, धार्मिक व लोक संस्कृति पर भी बहुत सारा साहित्य जनहित के लिए लिखा है। लेखन सम्बन्धि आप अपना अनुभव बताते हैं कि वर्तमान और भूतकाल में बहुत सारा अन्तर आ गया है पहले लगभग 500 लेखों में से एक सप्ताह में एक बार रचना प्रकाशित होती थी तो लेखक प्रभावकारी ढंग से लिखने का प्रयास करता था। परिणामस्वरूप उसमें सुधार की बहुत सम्भावनाऐं होती थी। आज के समय में पत्र-पत्रिकाओं में छपने के लिए बहुत सी जगह है। आपका नये लेखकों को सुझाव यह है कि वे लेख छपवाने सम्बन्धि कोई जल्दबाजी न करेंए पूर्ण अध्ययन व विश्लेषण के बाद ही कोई लेख छपना उतम रहता है। आपने अपनी रचनाओं के द्वारा विभिन्न मंचों पर चम्बयाली संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया हैए वर्तमान में भी इस दिशा में सक्रिय है। आप चाहते हैं कि चम्बा की बेजोड़ संस्कृति की जड़ें युगों-युगों तक जीवित रहें इसके लिए आप लेखन को महत्वपूर्ण साधन मानते हैं। इस हेतु आपके प्रयास प्रशंसनीय है। आपके लेख विभिन्न पत्रों जैसे गिरीराज, हिम भारती, सोमसी पत्रिका, हिमप्रस्थ, दैनिक ट्रिव्युन, दैनिक भास्कर आदि में प्रकाशित हुए हैं।

आप बताते हैं कि आपने अपने लेखों का प्रदर्शन व कविता पाठ लाहोल-स्पीति व किन्नौर को छोड़ कर हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी जिलों में किया है। पालमपुर के होली महोत्सव में, सुजानपुर में, भारत के लघु कथाकारों के अंतर्गत दिल्ली में विश्व पुस्तक सम्मेलन में कविता पाठ किया है। इसके अतिरिक्त रेडियों व दूरदर्शन से, अन्तर्राजीय सम्मेलनों में, चण्डीगढ़ टैगोर थियेटर में, अमृतसर, पंचकुला, कोटकपुरा में भी आपने कविता पाठ की प्रस्तुतियाँ दी है। अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए आपको पटियाला साहित्यिक संस्था द्वारा सम्मान प्राप्त हुआ है। आपको 2011-2012 में प्रो॰ प्रेम कुमार धूमल जी के हाथों द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। दूसरा पुरस्कार आपको समाजिक आक्रोश पत्र सहारनपुर यू॰पी॰ द्वारा प्रदत हुआ है। इसके अतिरिक्त आपने एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ में हिमाचल प्रदेश की ओर से प्रतिनिधित्व किया है। चम्बयाली लोक-संस्कृति को समृद्ध बनाने में श्री अशोक दर्द जी का लेखन सम्बन्धि योगदान सराहनीय है।

श्री एम॰आर॰ भाटिया

श्री एम॰आर॰ भाटिया जी का जन्म 12 सितम्बर, 1965 को गाँव भयोड, डाकघर बरोर, तहसील व जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश में हुआ। लगभग 13 वर्ष की उम्र में आपको लिखने का शौक पैदा हो गया। आप अपने लेखन के लिए प्रतिभा शर्मा जी को गुरु बताते हैं श्री मति प्रतिभा जी ने आपके अन्दर छिपे हुए गुणों को निखार कर लेखन सम्बन्धि कार्य के लिए प्रेरित किया। श्री एम॰आर॰ भाटिया जी ने लगभग 1000 चम्बयाली गीत लिखे हैं। इसके अतिरिक्त एक दर्जन ऑडियों कैसेटस में लगभग 75 पहाड़ी गीत गाऐं हैं। आप एक लेखक के साथ अच्छे लोक गायक भी हैं। आपने सन् 1988 में पहली बार पहाड़ी गीत लिखा जो श्रोताओं में बड़ा लोकप्रिय हुआ इसकी पंक्तियां निम्न थीरू 'तू मेरी कै लगदी कै लगदी तू मेरी कै लगरी, लोक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

पूछदे तू मेरी कै लगरी के लगदी तू मेरी कै लगरी'।

श्री भाटिया जी पहाड़ी गीतों के अतिरिक्त, पहाड़ी कविताऐं, कथाएं आदि भी लिखते हैं। आपके लेखन में कुछ चीजें गेयात्मक होती है तथा कुछ गेयात्मक नहीं होती है। इसके अतिरिक्त आप छंद बद्ध व छंद-मुक्त कविताऐं, चबोले, पहाड़री माहि, आदि भी लिखते हैं आपके लिखे लेखन की मुख्य विशेषता है कि आप समाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक व संस्कृति से जुड़े विषयों पर लिखना पसंद करते हैं। आपने चम्बा के चारों ही धर्मों से जुड़ी ऐतिहासिक कथाऐं चम्बयाली बोली में लिखि है। चम्बा के धार्मिक स्थलों पर ष्शिव भूमि के शिवालय' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न चम्बयाली भजन लिखे हैं। इसी प्रकार चम्बा की ऐतिहासिक लोक संस्कृति से जुड़ी माता सुनयना की सत्य कहानी को भी आपने चम्बयाली बोली में कलमबद्ध किया है। इसकी कुछ पंक्तियां हैंरू 'तेरा दिया पानी लहुबन कर रगों में बहता है। शत-शत नमन माँ तुझको हर चम्बावासी कहता है'।।

सन् 2001 के बाद समाचर पत्र पंजाब केसरी में लगभग आपके लिखे चम्बयाली 1000 गीत प्रकाशित हुए हैं। आपके विभिन्न लेख भी समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं। जैसे हिमाचली गीत गंगा, देवभूमि को कलम समर्पित, श्रद्धा सुमन चरणों में अर्पित आदि। एम॰आर॰ भाटिया जी के लेखन का उद्देश्य चम्बा की धार्मिक, सामाजिक व पारम्परिक लोक संस्कृति को युवा पीढ़ी में जीवित रखना है। इसके साथ अपने लेखन के माध्यम से चम्बा की अद्वितीय लोक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना मात्र है ताकि यह संस्कृति समाप्त न हो जाए। आपने आधिकतर अपने लेख स्थानीय चम्बयाली बोली में लिखें हैं आपके लेखों में लोक संस्कृति के उत्थान के भाव सामाजिक सरोकार वाले तत्व वीर रस, शृंगार रस आदि की बहुलता विद्यमान होती है। आपके लेखन की चम्बा जनपद में प्रर्याप्त लोकप्रियता है। आप अपने एन॰के॰ मूविज नाम यूटयूब चौनल के माध्यम से चम्बयाली लोक संस्कृति का काफी उत्थान कर रहे हैं।

इस अपने चौनल के माध्यम से आप यहाँ की युवा-पीढ़ी को चम्बयाली लोक संस्कृति से जोड़ने का काम भी कर रहे हैं। जिला भाषा एवं संस्कृति चम्बा द्वारा आयोजित विभिन्न सम्मेलनों व कवि गोष्ठियों में आप सक्रिय भाग लेते रहतें हैं। चम्बा की साहित्यिक एवं संस्कृतिक संस्था द्वारा आप 'चम्बा केसरी' के सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं। चम्बा की पारम्परिक लोक संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन में आप बड़ी तनमयता से कार्य कर रहे हैं।

श्री कुलभूषण उपमन्यू

श्री कुलभूषण उपमन्यु जी का जन्म 18 जनवरी, 1949 को श्री यज्ञदेव शर्मा जी के घर हुआ। आप जिला चम्बा की तहसील भटियात के कामला गाँव से सम्बन्ध रखते है। आप सनातक तक की शिक्षा प्राप्त करते-करते समाजिक कार्यों में भाग लेने लग गये। इन सामाजिक सेवाओं में संलिप्त रहते हुए आप लेखन क्षेत्र की ओर आ गये। लगभग 20-22वर्ष की उम्र से आपका लेखन सम्बन्धित कार्य शुरू हो गया। श्री देसराज डोगरा, पियुष गुलेरी, डॉ॰ व्यथित, सागर पालमपुरी जी को आप अपना आदर्श मानते हैं। इन्हीं के प्रोत्साहन से ही आप कुछ थोड़ा बहुत लिख पाऐं हैं आप पहाड़ी गीत, कविताऐं, प्रकृतिक संरक्षण व सामाजिक सरोकार पर लिखते हैं आप छन्दमुक्त कविताऐं लिखते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

आप बताते हैं। कि आप समाजिक सेवाओं से जुड़े होने के कारण बड़े जयादा गीत नहीं लिख पाऐं है। आपका लेखन प्रकृतिक सौंदर्य, व्यक्तिगत भावनाओं से ओत-प्रोत होता है। आपके लेखन में लिखते समय जो विचार-चिन्तन मन में आता है। उसी तरह का रस कविता या गीत में उभर कर सामने आता है। आप बताते हैं की आप का अधिक झुकाव समाजिक सेवा की ओर रहा है दूसरा ग्रामीण परिवेश होने के कारण आपको अपने लेखन को उतना अधिक निखारने का अवसर नहीं मिल पाया। परिवार का संचालन करने के लिए आपको कृषि, बागवानी व पशुपालन करना पड़ा। इस सब परिस्थितियों के रहते आपने अपने लेखन को उतना अधिक निखारने का अवसर नहीं मिल पाया। परिवार का संचालन करने के लिएआपको कृषि, बागवानी व पशुपालन करना पड़ा। इन सब परिस्थितियों के रहते आपने अपने लेखन को जिन्दा रखा है। श्री कुलभूषण जी बड़े नामचीन लेखकों-कवियों के बीच कविता पाठ कर चुके हैं।

प्रकृतिक पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक सरोकार सम्बन्धि आपके लेख कविताऐं, पहाड़ी गीत जनसता, गिरीराज, दैनिक ट्रिव्यून आदि समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं। वर्तमान में भी दिव्य हिमाचल, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण आदि समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। आपके अनुसार आपने अपने जीवन भले ही सीमित मात्रा में लिखा लेकिन बुद्धि जीवियों के मध्य प्रशंसनीय रहा है। जिला भाषा एवं संस्कृति विभाग चम्बा द्वारा आयोजित कवि गोष्ठियों व सम्मेलनों में आप सक्रिय भाग लेते रहते हैं। चम्बा जनपद की प्रकृतिक सौंदर्य-संरक्षण हेतु आपके लेख मंच के माध्यम से अहम भूमिका अदा करते हैं। वर्तमान में भी आप चम्बा की लोक संस्कृति को लेकर प्रर्याप्त सजग हैं व आपके लेखन सम्बन्धि प्रयास सक्रीय हैं। श्री कुलभूषण उपमन्यु जी का उद्देश्य चम्बा के नैसर्गिक सौन्दर्य व लोक संस्कृति का पहाड़ी लेखन के माध्यम से प्रचार-प्रसार कर इसे संरक्षण प्रदान करना है व लोक संस्कृति से युवा पीढ़ी को अवगत करवाना है ताकि आने वाले समय में युवा-पीढ़ी यहां की संस्कृति को भूल न जाऐ।

श्री टी०सी० सावन

श्री टी०सी० सावन चम्बा क्षेत्र के जानेमाने कवि, लेखक, संपादक व समाजसेवी है। श्री सावन जी का जन्म श्री नोरंग राम जी के घर 21 मई, 1979 को गाँव खामुहिन डाकघर कोहल, तहसील व जिला चम्बा हि०प्र० में हुआ। यह अपने लेखन कला को भगवान की देन मानते हैं। मात्र 12-13 वर्ष की उम्र से आपने लिखना शुरू कर दिया। इस क्षेत्र में आप स्व० डी०एस० देवल जी को अपना आदर्श मानते हैं। जो कि एक महान् लेखक व साहित्यकार थे। श्री सावन जी काव्य और गद्य दोनों विधाओं में लिखते हैं, काव्य विधा के अंतर्गत आप कविता, क्षणिका, गीत, गजल, भजन, हायकु, तांका इत्यादि का लेखन करते हैं। गद्य विद्या में आप कहानि, कथा, उपन्यास, लेख आदि लिखते हैं। लेखक सावन जी ज्यादातर स्वछंद लिखना पसंद करते हैं। बात यदि चम्बायाली लोक संस्कृति की करें तो आपने लगभग 50-60 चम्बयाली गीत व कविताएं लिखि हैं। इसके अतिरिक्त आपने कन्या भ्रूण हत्या पर अधारित चम्बयाली नाटक की भी रचना की है। आप चम्बा की सामाजिक, धार्मिक व लोक संस्कृति के साथ हृदयगत भावनाओं से जुड़ाव रखते हैं। इसी के फलस्वरूप आपने कई एतिहासिक, समाजिक व धार्मिक तत्वों पर आधारित छंदबद्ध व छंदमुक्त चम्बयाली कविताऐं व क्षणिकाऐं भी लिखि है। आपके लेखों में बुद्धि सम्बन्धि व गंभीरता जैसे तत्व उल्लेखनीय रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। इसके साथ आप करूण रस व विरह

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

भाव से ओत-प्रोत गीत व कविता, क्षणिक लेखन करते हैं। श्री सावन जी ने चम्बा की धार्मिक संस्कृति का उल्लेख आपने लिखे 25 चम्बयाली भजनों के माध्यम से किया है। इसी प्रकार कविताओं व गीतों के द्वारा चम्बा के ऐतिहासिक तत्वों को भी उजागर किया है। आपने कई चम्बयाली गीत लिखें हैं जो इस प्रकार हैरू 1 तै ता भुलि रखया' 2 घ्ड़ी पल रैहणा कियां' 3 जदों याद तेरी आँदी ए' 4 'भरा घड़ा पाणी रा' 5 चुराहे री जातरे' 6 मेला चम्बे शहरा बिच'7 मेंरे चम्बे आइजा गोरिये तिजो पहाड़ा री सैर करावां।

यह गाना चम्बा में काफी लोकप्रिय भी रहा है। आप पिछले लगभग 25 वर्षों से इस क्षेत्र में सक्रिय कार्य कर रहे हैं। श्री सावन जी एलबम प्रोडक्शन के माध्यम से चम्बयाली लोक संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। कन्या भ्रुण हत्या के संदर्भ में लिखी 'ेीम' नामक कविता को 2015-2016 में 4 बार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। इसी कविता के फलस्वरूप आपका नाम दुनियां के 100 संभ्रांत लेखकों में भी दर्ज किया गया कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित आपने एक पहाड़ी गीत की रचना की जो इस प्रकार है- 'दिखी लैणा दे माए मेरिये मिंजों भी ए संसारा तेरा कुण मुल लगरा। बेटी है ता क्या होया मैं वी ता है तेरा जाया मेरा कजो डर लगदा।'

आपकी लिखी सात किताबें बाजार में पाठाकों के लिए उपलब्ध है और 5-6 और आने के लिए प्रक्रिया के अन्तर्गत है। श्री सावन जी की लिखे गीत, कविताऐं कहानियां, कथाऐं विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है। जैसे गिरीराज, हिमप्रस्थ, विपाशा, सोमसी, दिव्य हिमाचल दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिम मानस, हिम प्रतीक, हिम श्रृंखला, हिमालय केसरी, हिमाचल मित्र, शब्द मंच आदि। इसके अतिरिक्त हिमाल के बाहरी राज्यों में भी पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते हैं जैसे नारीत्व (पंजाब), अविराम साहित्यिकी (उत्तराखण्ड), काव्या पब्लिकेशन भोपाल, प्रखर गूंज दिल्ली, साहित्य कलश पटियाला, आदि। जिला भाषा एवं संस्कृति विभाग चम्बा द्वारा आयोजित विभिन्न कवि गोष्ठियों व सम्मेलनों में आप सक्रिय भाग लेते हैं। हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी जिलों में आपने कविता पाठ किया है व वर्तमान में भी आप सक्रिय कार्य कर रहे हैं। आपको वर्ष 2019 में साहित्य के लिए शताब्दी सम्मान प्राप्त हुआ है। वर्ष 2010 में आपको अपने उत्कृष्ट लेखन के लिए दिव्य हिमाचल द्वारा भी सम्मान प्राप्त हुआ है। 2015में आपको उच्च श्रेणी के 100 लेखकों की श्रेणी में शामिल किया गया यह आपके लिए सर्वा ेच्च पुरस्कार रहा है। आप अपने यूटयूब चौनल के माध्यम से चम्बयाली लोक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। श्री टी०सी० सावन जी न केवल मनोरंजन के लिए अपितु चम्बा की पौराणिक विरासत के सवंर्धन के लिए व सामाजिक बुराईयों को समाप्त कर समाज की युवा पीढ़ी को नई दिशा देने के लिए अपने लेखन के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

श्री प्रभात सिंह

श्री प्रभात सिंह जी चम्बयाली लोक संस्कृति के उत्थान हेतु लेखन करने वाले प्रभावी पहाड़ी लेखक है। श्री प्रभात सिंह जी का जन्म 20 नवम्बर, 1953 को गांव धरवाई, डाकघर खरग, तहसील सिहुन्ता जिला चम्बा हि०प्र० में हुआ। श्री प्रभात सिंह जी को लिखने का शौक कवि सम्मेलनों से पैदा हुआ। आपका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जहां आपको लेखन सम्बन्धी मार्गदर्शन आपके मामा स्व० अमर सिंह रणपतिया जी से मिला। श्री प्रभात जी लेखन क्षेत्र में अपने मामा अमर सिंह रणपतिया जी को गुरु मानते हैं जो स्वयं बहुत बड़े लेखक, कवि व साहित्यकार थे। आप स्वयं जीवन भर शिक्षा क्षेत्र से जुड़े रहे हैं। अंत में सेंटर हैड टीचर के पद से रिटायर्ड हुऐ। पहाड़ी लेखक के रूप में श्री प्रभात सिंह जी सन् 1980 से निरंतर लिख रहे हैं। आप विभिन्न विधाओं में लिखते हैं विशेष रूप से आप चम्बयाली कविताऐं व गीतों के

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

माध्यम से यहां की लोक संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। आपकी कविताऐं छंद बद्ध व छंदमुक्त दोनों पहलुओं से सम्बन्धित होती है। आपने चम्बयाली पहाड़ी व हिन्दी कुल 25-30 कविताऐं गीत लिखे हैं जो निम्न प्रकार से हैं-

कविता रैली- जालु नेरा गया होई रोटी खादी सार टबर इकी जगह गेया गठोई, कल जो बेला न रहे कोई इसी गल्ला दी डिसकस शुरू गई होई'।

खेल बिजलि, दा- चम्बे या डल्हौजी जांदा था कोई ता बिजलि, दे दर्शन जादें थे होई लम्प कने लालटैन ता रखदा था कोई-कोई, जुगणु कने छयाटुआं ने टैम पास करदे थे सब कोई'।

इनके द्वारा लिखे गीतों व कविताओं में हास्यपद भाव, श्रृंगार रस, करूण रस आदि की बहुलता होती है। सामाजिक बुराईयों पर भी आप कविता लेखन करते हैं। आप अपनी कविताओं में चम्बा की भटियाली बोली का प्रयोग करते हैं श्री प्रभात सिंह जी अपने लेखन में ऐतिहासिक, सामाजिक तत्वों को मुख्य विषय बनाकर लिखना पसंद करते हैं। चम्बा जनपद के पहाड़ी लेखक होने के नाते आपके लेखन का उद्देश्य चम्बा की सामाजिक लोक संस्कृति के नैतिक मूल्यों से आम जनता को परिचित करवाना है। श्री प्रभात सिंह जी पिछले 27 वर्षों से लेखन कार्य कर रहे हैं। इन वर्षों के अंतराल में आपने मानसिक चिंतन, मनन व भाव रूपी विभिन्न तरह के परिवर्तन महसूस किये हैं। आपकी विभिन्न कविताएं व गीत गिरी-राज, हिमभारती जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। श्री प्रभात सिंह जी पिछले कई वर्षों से जिला भाषा एवं संस्कृति विभाग चम्बा के माध्यम से कई जगहों पर कविता पाठ कर चुके हैं। आप राष्ट्रीय कवि संगम संस्था द्वारा हिमाचल प्रदेश के बाहर भी जैसे छत्तीसगढ़, मथुरा, बम्बई, दिल्ली जैसे मंचों पर भी कविता पाठ कर चुके हैं। श्री प्रभात जी का कहना है कि मनुष्य के मनभाव, चिंतन आदि तत्व लिखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। जो कि समय व स्थितियों के अनुरूप बदलते भी रहते हैं। और इसी के अनुरूप कोई भी लेखक अपने लेखन को अंजाम देने में समर्थ होता है। श्री प्रभात सिंह जी लोक संस्कृति को सही दिशा में ले जाने के लिए अपने लेखन के माध्यम से सराहनीय प्रयास कर रहे हैं।

निष्कर्ष

चम्बयाली लोक संस्कृति में लोक साहित्य गौरवशाली व अमूल्य निधि है। इसी तरह लोक साहित्य में चम्बयाली समाज का सुन्दर चित्रण व्यक्त होता है। यह समाज की आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक स्थिति का सशक्त चित्र प्रस्तुत करता है। चम्बा जनपद के चम्बयाली लेखक लोक साहित्य को अपनी लेखनी के माधम से प्रोत्साहन देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। यह लेखक साहित्य को संरक्षण प्रदान करने और समाज को अपनी क्षेत्रीय बोली ;चम्बयालीद्ध से परिचित करवाने में तनमयता से सक्रिय भूमिका अदा कर रहें हैं। इसके अतिरिक्त यह चम्बयाली लोक लेखक, कवि चम्बयाली साहित्य का औचित्य प्रमाणित करने में निरंतर चम्बयाली लोक गीतों, कविताओं, नाट्यों व लेखों, चवोलों, पहाड़ी कहावतों का नित्य सृजन कर रहे हैं। अनुमानित रूप से कहा जा सकता है कि इस जनपद में लोक साहित्य का बीजारोपण भले ही वर्षों पूर्व कुछ अज्ञात लोगों द्वारा हुआ हो लेकिन स्थानीय लोक लेखकों, कवियों के अथक प्रयासों से आज चम्बा के लोग इसे अपना कहने पर गर्व महसूस करते हैं। इस जनपद के लोक गीत, पारम्परिक कथाऐं, घटनाऐं, चम्बयाली कहावतें, लघु कथायें इन सबकों यहाँ के स्थानीय लेखक, कवि एक सुत्र में पिरो कर समाज में प्रेषित कर सामाजिक जागरूकता लाने का प्रयास कर रहें हैं। यहाँ के अधिकांशतः चम्बयाली लेखक अपने प्राकृतिक स्वभाव से ही लिखने की ओर आकर्षित हुए हैं। कुछेक लेखक अपने पारिवारिक वातावरण से प्रेरणा पा कर लेखन क्षेत्र में अग्रसर

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

हुए हैं। यह लेखक चम्बा की लोक संस्कृति का लेखन विभिन्न विधाओं जैसे छंदमुक्त व छंदबध पहलुओं से कर रहे हैं। चम्बयाली लेखकों का प्रत्येक शब्द व प्रत्येक पंक्ति लोक जनमानस से जुड़ी हुई है।

आज के समय में लोक लेखकों का लेखन चम्बयाली समाज को गर्व महसूस कराने में प्रतिबध कर रहा है। चम्बा क्षेत्र में चम्बयाली लेखकों, कवियों का भिन्न-भिन्न स्थानों पर संगोष्ठियों, कवि सम्मेलनों का आयोजन हो रहा है। इस संदर्भ में यह प्रयास सेतु का कार्य कर रहा है। इस प्रकार के प्रदर्शन चम्बयाली लेखक कलाकार न केवल चम्बा में ही बल्कि इसके बाहर भी प्रतिवर्ष करते हैं। इस तरह चम्बयाली लेखक कलाकार अपने लेखन से चम्बयाली साहित्य संस्कृति को न केवल राज्य स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी स्थापित करने में सफल हुए हैं।

चम्बा जनपद एक मात्र ऐसा क्षेत्र है जहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मों के लोग समान रूप से जीवनयापन कर रहें हैं। हालाँकि चम्बा की लोक संस्कृति में पर्याप्त विविधता पाई जाती है। इस बिन्दु पर चम्बयाली लेखकों का समाज के लिए लेखन इनके द्वारा लिखी पुस्तकें लोक संस्कृति की विविधता को एकता में परिवर्तित करती है। इतना ही नहीं जिला भाषा संस्कृति विभाग चम्बा द्वारा भी चम्बयाली लेखक कलाकारों को समय-समय पर मंच मुहैया करा कर समाज के लोगों को चम्बयाली संस्कृति से जोड़ने के सराहनीय प्रयास किये जाते हैं।

इसके साथ साहित्य व लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए इन स्थानीय लेखक-कवियों को उचित पुरस्कार के साथ कवि सम्मेलन व कवि गोष्ठियों का भी आयोजन करवाया जाता है। विशेष बात यह है कि इस प्रकार के आयोजनों से लोक साहित्य लेखन की ओर चम्बा की युवा पीढ़ी और भी अधिक रूचि लेती है। इसके साथ यह चम्बयाली लेखक भी अन्य युवाओं को अपने लेखन सम्बन्धि उपर्युक्त जानकारी दे कर लोक संस्कृति के प्रति जागरूक करने में सहयोग करते हैं। इस प्रकार सार रूप में कहा जा सकता है कि चम्बयाली लोक संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन में चम्बयाली लोक लेखकों का प्रयास प्रशंसनीय है।

संदर्भ

साक्षात्कार

श्री विक्रम कौशल, गाँव भटका, डाकघर समोट, तहसील सिहुन्ता, जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री गुलशन पाल, गांव परेल तह व जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री अंक भट्ट, धड़ोग मुहल्ला, चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्रीमती लीला ठाकुर, गाँव चुड़ी पुल, डाकघर चुड़ी, तहसील व जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री जगजीत, गाँव संग्रैहन, डाकघर बलेरा, तहसील डलहौजी, जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री प्रीतम सिंह, गाँव बनीखेत, डाकघर बनीखेत, तहसील डलहौजी, जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्रीमती मंजु चिस्ति, जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री खेम राज खन्ना, जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री राकेश कुमार, गाँव चुहाड़ी, डाकघर राजेरा, तहसील व जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री अशोक दर्द, गाँव घट, डाकघर शेरपुर, तहसील डलहौजी जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री एम॰आर॰ भाटिया, गाँव भयोड, डाकघर बरोर, तहसील व जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री कुलभूषण उपमन्यु, गाँव कामला, तहसील भटियात, चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री टी॰सी॰ सावन, गाँव खामुहिन डाकघर कोहल, तहसील व जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।
श्री प्रभात सिंह, गांव धरवाई, डाकघर खरग, तहसील सिहुन्ता जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश।